19 मई 2016

दावुतोग्लू के बाद: तुर्की के सत्ताधारी दल में सत्ता संघर्ष

*डॉ .ओमैर अनस**

तुर्की के प्रधानमंत्री अहमत दावुतोग्लू ने घोषणा की है कि वह को होने वाल 2016 मई 2216 अगले पार्टी कांग्रेस में उम्मीदवार नहीं होंगे और पार्टी द्वार नया उम्मीदवार चुने जाने के बाद वे अपना पद छोड़ देंगे। पिछले कुछ सप्ताह में, विशेष रूप से जून के आम चुनाव के बाद 2015, तुर्की के राष्ट्रपति रेसेप तैयप एर्दोगन और प्रधानमंत्री अहमत दावुतोग्लू के बीच मतभेदों की सुर्खियों ने ऐसे अनुमान को हवा देने लगी कि जैसे कोई बहुत बड़ा बदलाव होने को है। पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल्ला गुल, पूर्व मंत्रियों अब्दुल लतीफ सिनर और बुलेंट अरिनक की तरह एर्दोगनके अलग होने के बाद दाउतोग्लू सत्तारूढ़ अडाल्टवे कल्किम्मा पार्टीसी पार्टी से चौथे वरिष्ठ नेता बन जाएंगे। (एके)पहला बड़ा इस्तीफा पूर्व वित्त मंत्री अब्दुल लतीफ सिनर का था, जिन्होंने आर्थिक नीतियों[1] पर विवाद को लेकर में इस्तीफा दे दिया 2008 और उसके बाद बुलेंट अरिनक का इस्तीफा आया ,जो 2015तक संसद के अध्यक्ष और उप -प्रधानमंत्री थे। एर्दोगन के साथ उनका विरोध ज्यादातर कुर्द आतंकवादियों के साथ गुप्त शांति प्र क्रिया और गीज़ी पार्क में विरोध-[2]प्रदर्शन के खिलाफ बल का उपयोग के मुद्दे पर सामने आया । पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल्ला गुल अपने राष्ट्रपति पद से सेवानिवृत्त होने के बाद ज्यादातर अराजनैतिक जीवन जी रहे हैं ,लेकिन बीच बीच-मीडिया में उनकी प्रतिक्रिया पर्याप्त संकेत देते हैं कि वे कई मुद्दों पर एर्दोगन का समर्थन नहीं करते हैं। संबंधों को सुधारने के कई प्रयासों के बावजूद ,पार्टी गुटबाजी केवल असंतुष्ट स्वर को बढ़ावा दे रहे है ,जिन्हें इन तीन नेताओं का समर्थन प्राप्त है और प्रधान मंत्री अहमत दावुतोग्लू के जबरन बाहर किए जाने से संभवतः एकेपी के भीतर एर्दोगन-विरोधी खेमे को मजबूती मिलेगी।

राष्ट्रपति के साथ उनके करीबी संबंधों के बावजूद , दावुतोग्लू अन्य स भी नेताओं में सबसे कमजोर थे । दरअसल ,अहमत दावुतोग्लू कभी जमीनी राजनेता नहीं रहे। उन्हें एर्दोगन अपनी अकादमी से ला ये थे , जहां वे पीएचडी अपने छात्रों के मार्गदर्शक थे। एकेपी के जमीनी नेताओं ने एर्दोगन की पसंद को लेकर कभी शिकायत नहीं की थी। में राष्ट्रपति पद के लिए 2014उनके आगे आने के बाद से , एर्दोगन के करीबी सहयोगी उम्मीद कर रहे थे कि पार्टी का पुराना संरक्षक या मूल पार्टी, वेलफेयर पार्टी का कोई दावुतोग्लू की जगह लेगा। उप-प्रधानमंत्री नुमान कुरुतुलमस और एकेपी के कई वरिष्ठ नेता शीर्ष पद के लिए कतार में थे। इस पद के लिए दावुतोग्लू के चयन ने पार्टी के भीतर कई लोगों को चौंका दिया था , लेकिन इसके खिलाफ सार्वजनिक रूप से कोई भी सामने नहीं आया।

दरार

जून के आम चुनावों के बाद 2015, यह स्पष्ट हो गया कि पार्टी द्वारा अपना पहला चुनावी झटका झेलने के बाद एकेपी की आंतरिक गतिशीलता बहुत तेजी से आगे बढ़ेगी , केवल नवंबर में 2015आकस्मिक चुनाव ही इससे उबरने का एकमात्र रास्ता है। घटनाओं की श्रृंखला बहुत तेज़ी से तब शुरू हुई जब एकेपी के सर्वोच्च निकाय के लिए दावुतोग्लू द्वारा तैयार किए गए उम्मीदवारों की सूची को केंद्रीय निर्णय और कार्यकारी बोर्ड (सीडीएसी)ने सितंबर में आयोजित पार्टी कांग्रेस में 2015पूरी तरह से बदल दिया । 15 की नियुक्ति पर मतभेद प्रांतीय और जिला पार्टी के नेताओंखुल कर तब सामने आया, जब सीडीएसी के अप्रैल को प्रांतीय अधिकारियों को नियुक्त करने के 29 सदस्यों ने 47मामले में दावुतोग्लू के अधिकार खत्म करने का फैसला किया था। इस फैसले से साफ हो गया कि पार्टी के भीतर उन्हें अलगथलग किया-[3]जा रहा है। एक अज्ञात ब्लॉग, "द पेलिकन ब्रीफ ने दावुतोग्लू (पेलिकन डोसियस) "के तथाकथित एर्दोगन-विरोधीफैसलों को लेकर आरोपों की श्रृंखला प्रकाशित होने के एक दिन बाद 4 मई को अगले पार्टी कांग्रेस में पार्टी अध्यक्ष की पुन चुनाव की :मांग न करने के दावुतोग्लू के फैसले की घोषणा हुई। ब्लॉग में लिखा है:

> देवियों यह एक भयानक देश है। यह एक ऐसा देश है जहां सभी महाशक्तियां तुर्की !सज्जनो !को लेकर शतरंज की बिसात बिछा रखा है। यह देश सिर्फ एक दिन में एर्गेनेकॉन को शांत करके या समानांतर संरचना को धमका कर गुलाब की सेज नहीं बन जाएगी। यहां तक कि अगर आप एक गद्दार से छुटकारा पा लेते हैं , तो ऊनकी जगह कोई नया आ जाएगा। वे हमें आसानी से अपने हाल पर नहीं छोड़ेंगे। अगर जरूरत पड़ी तो वे हमारे खिलाफ हो जाएंगे। इसलिए , अपनी आंखें खुली रखें। अपने चारों ओर देखें, पता करें कि क्या चल रहा है। लेकिन ध्यान से देखिए। सरसरी नजर से मत देखिए। और जो मैं देख रहा हूंउसे , देखिए।[4]

ब्लॉग ने दावुतोग्लू पर सीरिया के लिए 'बी' योजना नहीं बनाने और विफलता के लिए उसे जिम्मेदार ठहराए जाने के खिलाफ आरोप लगाया। इसमें लिखा था, " व्यवहारिक तौर पर देखा जाए तो आमतौर पर वे विफल रहे हैं। उन्होंने कहा ,'एस्द (असद-बशर अल)की सत्ता महीने में 6गिर जाएगी। ' , सिर्फ कहा नहींबल्कि इसके अनुसार अपनी योजना भी बनाई। उनके पास कोई बी प्लान नहीं था।" आगे आरोपों की सूची में पश्चिम और यूरोप , जिनके साथ राष्ट्रपति एर्दोगन का तनावपूर्ण संबंध है ,के साथ उनकी कथित जटिलता शामिल है। यह राष्ट्रपति प्रणाली को सुविधाजनक बनाने की दिशा में बहुत कम काम करने का आरोप भी है। यह अनोखा ब्लॉग राष्ट्रपति के बहुत करीबी व्यक्ति द्वारा लिखा गया था और इसका स्पष्ट उद्देश्य दावु तोग्लू क र् पार्टी के अगले पद से बाहर निकलने के साथ साथ- प्रधानमंत्री पद के मद्देनजर एक मजबूत मामला बनाना था।

यह दरार , के संकट की याद दिलाती है जब रेसेप तैयप एर्दोगन 2001 अब्दुल्ला गुल ,बुलेंट अरिनक और अब्दुल लतीफ सिनर अपनी सादेट पार्टी में सुधारवादी के रूप में पार्टी नेता और इस्लामवादी नेकटमेटिन एर्बेकन के खिलाफ उठ खड़े हुए । एर्दोगन और गुल दोनों ही सादत पार्टी के उभरते सितारे थे जिन्हें ,पार्टी के नेता एर्बिकन का आशीर्वाद प्राप्त था। लेकिन अब्दुल्ला गुल के रेका ई कुटन के खिलाफ खड़ा होकर पार्टी की इच्छा के खिलाफ पार्टी के नेता पद के लिए उसके द्वारा नामित व्यक्ति को चुनौती देने के बाद पार्टी से वे अलग हो गए। पार्टी का चुनाव हारने के बाद अब्दुल्ला गुल , रेसेप तयैप एर्दोगन ,बुलेंट अरिनक और अब्दुल लतीफ सिनर ने पार्टी से नाता तोड़ लिया और अपनी पार्टी एकेपी बनाई। गुल और एर्दोगन के नेतृत्व वाली युवा पीढ़ी एक उदा रवादी इस्लामिक एजेंडा अपनाने को इच्छुक थी, जो मुख्य रूप से पार्टी के पश्चिम-विरोधी बयानबाजी को कम कर रहा था। नतीजतन, एके पार्टी ने यूरोपीय संघ समर्थक नीति अपनाई , जो उन्हें अपने प्रतिद्वंद्वियों के खिलाफ एक लोकप्रिय राजनीतिक एजेंडा देता। सादत नेता एर्बिकन के लिए ,यूरोपीय संघ महज एक 'क्रिश्चियन क्लब' था और एक पश्चिम-समर्थक तुर्की उन्हें अस्वीकार्य था। एर्दोगन और गुल का पश्चिम की ओर झुकाव अस्वीकार्य था और दोनों गुटों एकदूसरे के कट्टर विरोधी थे।-

आज, एर्दोगन उसी स्थान को ग्रहण करते हुए दिखाई देते हैं , जहां सादत पार्टी के एर्बिकन कभी हुआ करते थे। दावुतोग्लु को एर्दोगन समर्थक-पार्टी के कार्यकर्ताओं द्वारा "पश्चिमसमर्थक-, यूरोपीय संघ", जर्मन मित्र आदि करार दिया जाता है। एर्दोगन अपने नियमित भाषणों में जिस तरह से अपने पश्चिमी सहयोगियों पर ज्यादातर सीरियाई संकट पर उनके कथित विश्वासघात के लिए आरोप लगा रहे हैं । यह हताशा एर्दोगन का केवल व्यक्तिगत मामला नहीं है। पिछले कुछ वर्षों में तुर्की के जनमत अमेरिका विरोधी हो गया है। प्यू रिसर्च सेंटर के सर्वेक्षण के अनुसार 2015, केवल प्रतिशत तुर्क अमेरिका को 29

प्रशंसात्मक नजर से देखते हैं। लगभग आधा तुर्क इराक और सीरिया में इस्लामिक स्टेट के खिलाफ अमेरिकी कार्रवाई को मंजूरी देता है।[5]

एर्दोगन बनाम दावुतोग्लु

लंबे समय से भरोसेमंद साझेदारों के बीच ऐसी क्या गड़बड़ी हुई ,जिसने उन्हें इस कगार पर ला खड़ा कर दिया है?से 2012 एकेपी सरकार ने केवल अपनी तथाकथित को निष्प्रभावी करने "शून्य समस्या नीति" के बजाए और समस्याओं र्क मोल लिया है। कुर्द के साथ शांति प्रक्रिया की विफलता ,कमजोर होती अर्थव्यवस्था ,सीरियाई संकट ,रूस ,मिस्र और इजरायल के साथ तनावपूर्ण संबंध और तुर्की तथा उसके नाटो सहयोगियों के बीच अविश्वास प्रमुख मुद्दे हैं जिसने ,तुर्की को आंतरिक और बाह्य रूप से पूरी तरह से घेर लिया है। दावुतोग्लू और एर्दोगन दोनों इस स्थिति के लिए जिम्मेदार हैं और किसी को इन विफलताओं के लिए जिम्मेदारी लेनी होगी। जैसा कि दावुतोग्लू विरोधी-ब्लॉग कहता है , उनका कसूर कहीं ज्यादा है। सीरियाई संकट के लिए एकेपी की प्रतिक्रिया साफतौर पर गलत थी कि इसने देश को 'समस्या शून्य करने के बजाए ''तमाम समस्याओं' से जकड़ दिया है। इसमें इस्लामिक स्टेट का तुर्की समाज में घुसपैठ; कुर्द आतंकवादियों के साथ शांति प्रक्रिया का पटरी से उतर ना; शरणार्थी संकट का अर्थव्यवस्था और सुरक्षा पर अतिरिक्त दबाव डालना और नए दोस्त के रूप में तुर्की को मिले रूस के साथ का बड़े अविश्वास के साथ टूटना शामिल है।

एर्दोगान और दावुतोग्लू दोनों ही अमेरिका से उत्तरी सीरिया में 'नो फ्लाई ज़ोन' या शरणार्थियों के लिए एक सेफ ज़ोन की स्थापना के लिए , अकेले सीरिया में इस्लामिक स्टेट के खिलाफ किसी जमीनी अभियान के बारे में सोचने की तुर्की मांग स्वीकार करवाने में विफल रहे हैं। यदि दावुतोग्लू इन मोर्चों पर कुछ खास करने में विफल रहे हैं, तो यह कोई पर्याप्त संकेत नहीं हैं कि अगला प्रधानमंत्री भी इन मुद्दों पर किसी भी सफलता को सुरक्षित कर सकता है। दरअसल मौजूदा समय ,में पूरा हो चुका यूरोपीय संघ-तुर्की शरणार्थीसमझौता भी वापस ले सकता है बशर्ते सौदे को लागू करने के लिए तुर्की से पूर्व शर्त तुर्की के नागरिकों के लिए वीजा मुक्त यात्रा प्रा प्त करने में प्रधानमंत्री अगर विफल हुए। तो क्या तुर्की का यूरोपीय संघ परियोजना निराशाजनक सीमा तक पहुंच गई है? यूरोपीय संघ तुर्की के शरणार्थी के बारे में- ,एर्दोगन जो कुछ भी जनता को बता रहे हैंवह इस बात का संकेत था कि एर्दोगन इस समझौते से बेहद निराश थे। दावुटोग्लू-विरोधी चल रही बहस में यह आरोप भी शामिल हैं कि पश्चिमी नेताओं के साथ दावुतोग्लू की बैठकें इन मुद्दों में ज्यादा फायदेमंद नहीं रही हैं। दावुतोग्लू पर पश्चिम परस्त होने का आरोप लगाया जा रहा है। एर्दोगन-विरोधी राजनीतिक दलों को लगता है कि ऐसा एर्दोगन के इशारे पर ही हो रहा था।[6] सीरियाई संकट के दौरान एके पार्टी की सरकार तब विफल हो गई थी जब खुद एर्दोगन प्रधानमंत्री थे। बशर अल असद के खिलाफ उनका जोशीला अभियान उनके पश्चिमी साझेदारों के वादों पर

आधारित था ,जो उनकी उम्मीदों पर खरे नहीं उतरे ,खासकर नो फ्लाई जोन के क्रियान्वयन के सिलसिले में। यह संकट घरेलू समस्या से कहीं अधिक दमदार था। पीकेके से संबद्ध आतंकवादियों द्वारा बार बार- हमलों के बादतुर्की ने आतंकवाद के खिलाफ युद्ध की घोषणा की ,जिससे पीकेके को पूरी तरह से काबू करने की कसम खायी। हालांकि इस युद्ध को अति राष्ट्रवादी तत्वों का समर्थन प्राप्त था ,धीरे धीरे-इसे पत्रकारों और शिक्षाविदों सहित अन्य राजनीतिक विरोधियों का भी समथर्न मिलने लगा था। कहते हैं कि मीडियाकर्मियों और शिक्षाविदों के खिलाफ आतंकी आरोपों के इस्तेमाल से दावुतोग्लू सहज नहीं थे। इसी तरह 'समानांतर राज्य' के खिलाफ चल रहे अभियान, जिसका इस्तेमाल अमेरिका स्थित विद्वान फेथुल्लाह गुलेन के साथ जुड़े व्यक्तियों और संस्थानों के खिलाफ किया गया था को ,दावुतोग्लू से पर्याप्त समर्थन प्राप्त नहीं था। जाहिर यह बात विभाजन का संकेत दे रहा था। और संवैधानिक सुधार और रा ष्ट्रपति प्रणाली में परिवर्तन एके पार्टी के लिए महत्वपूर्ण प्राथमिकता बन ग ई थी ,जिसके प्रति दावुतोग्लू को ज्यादा उत्साही नहीं पाया गया था।[7]

एके पार्टी के आयाम

एके पार्टी में आपसी मतभेद कोई नई बात नहीं है ,हालांकि जून में पहले चुनाव के बाद से 2015यह अधिक उजागर होने लगी ,जब दावुतोग्लू का झुकाव गठबंधन बनाने के प्रति अधिक देखा जाने लगा और एर्दोगन समर्थक नुमाइंदे संवैधानिक परिवर्तन के मद्देनजर बहुमत हासिल करने के लिए नया चुनाव जीतने के पक्ष में थे।[8] संभवतया एर्दोगन एक ऐसी स्थिति का स्वागत कतई नहीं करेंगे के दशक 1980 , मेंजिस दौर से मदरलैंड पार्टी गुज़री थी ;जब पार्टी को अपने करिश्माई नेता टर्गुत ओज़ल को राष्ट्रपति बनने के बाद बहुत बड़ा झटका लगा था और पार्टी धीरे[9]धीरे तुर्की के चुनावी नक्शे से गायब हो गई।-

जैसा कि केंद्रीय निर्णय और कार्यकारी बोर्ड [10](सीडीएसी) ने पहली बार, पार्टी के प्रांतीय प्रमुखों की नियुक्त के सिलसिले में प्रधानमंत्री के प्रयास को खारिज कर दिया। माना यह जाता है कि एर्दोगन के वफादारों के प्रभुत्व वाले निकाय आने वाले दिनों में भी सक्रिय रहेंगे। दावुतोग्लू आजीवन पार्टी के सर्वोच्च निकाय ग्रैंड कांग्रेस के मानद सदस्य बने रहेंगे ,लेकिन पार्टी के किसी भी प्रभावशाली पद को ग्रहण करने के लिए पार्टी के भीतर शायद ही उन्हें पर्याप्त समर्थन मिले। जैसा कि उन्होंने घोषणा की है कि वे राजनीतिक जीवन में सक्रिय रहेंगे।

रण ग्रैंड कांग्रेस को होने वाली अगली असाधा 2016 मई 22पार्टी का सर्वोच्च निर्णय लेने वाली संस्था, केंद्रीय निर्णय और प्रशासनिक समिति के अध्यक्ष और सदस्यों का चुनाव करेगी। (सीडीएसी) सीडीएसी की भूमिका को देखते हुए , जो भी गुट सीडीएसी को नियंत्रित करता है , वह पार्टी मामलों को नियंत्रित करेगा। केंद्रीय कार्यकारी बोर्ड)सीईसी या एमवाईके) सीडीएसी का एक निचली निकाय है, जिसे सीडीएसी के सदस्यों में से चुना जाता है। सर्वोच्च और सबसे शक्तिशाली संगठनात्मक निकाय ग्रैंड

कांग्रेस है ,जो पार्टी के उच्च नेतृत्व का चुनाव करती है और यह ,टाउन कांग्रेस ,जिला कांग्रेस और सिटी कांग्रेस की लंबी श्रृंखला के माध्यम से चुने गए सदस्यों से बना है। ग्रैंड कांग्रेस के लिए निर्वाचित प्रतिनिधियों की कुल संख्या तुर्की के ग्रैंड नेशनल असेंबली के सभी सदस्यों की संख्या से अधिक नहीं हो सकती है। पार्टी के अगले अध्यक्ष के लिए नाम प्रांतीय प्रमुखों, प्रतिनियुक्तियों, सीडीएसी सदस्यों और पार्टी संस्थापक सदस्यों द्वारा भेजे जाएंगे। ग्रैंड कांग्रेस से पहले केवल एक नाम प्रस्तावित करने और इसे सर्वसम्मति से चुने जाने की प्रथा रही है। अब तक राष्ट्रपति एर्दोगन को इन तीन निकायों का मजबूत समर्थन प्राप्त है और इसलिए, किसी भी नियुक्ति के लिए उनकी पसंद सबसे महत्वपूर्ण रहेगी। अब तक अहमत दावुतोग्लू के इस्तीफे और नए प्रधान मंत्री पद के चुनाव के मुद्दे पर किसी बड़े मतभेद का कोई संकेत नहीं है। सीडीएसी और ग्रैंड कांग्रेस के अधिकांश सदस्य बगैर किसी विवाद के एक नेता का चुनाव करेंगे।

एकेपी का निर्णायक निकाय

मुख्यालय संगठन	समूह	शहरी संगठन	जिला संगठन	कस्बाई संगठन
ग्रैंड कांग्रेस के लिए विभिन्न पद्धति से 550 से अधिक सदस्य	संस्थापक समिति	शहरी संगठन के लिए डीसी द्वारा चुने गए 600 से अधिक प्रतिनिधि नहीं।	जिला सं गठन 400 प्रतिनिधि	कस्बाई संगठन 100 प्रतिनिधि
जीसी द्वारा चयनित अध्यक्ष	पार्टी का टीबीएमएम समूह (संसद के सभी पार्टी के सदस्यों से)	सीसी द्वारा चयनित शहरी अध्यक्ष	डीसी द्वारा चयनित जिला अध्यक्ष	टी-सी द्वारा चयनित कस्बाई अध्यक्ष
केंद्रीय निर्णय और प्रशासनिक समिति (सीडीएसी) जीसी द्वारा चुने गए 50 सदस्य	प्रांतीय असेंबली समूह	सीसी द्वारा चयनित शहरी प्रशासनिक समिति (सीएसी) 20-50 सदस्य	डीसी द्वारा चयनित जिला प्रशासनिक समिति 7-30 सदस्य	कस्बाई प्रशासनिक समिति
केंद्रीय कार्यकारी समिति (सीईसी) के जनरल चेयरमैन, असिस्टेंट जनरल चेयरमैन, जनरल सेक्रेटरी और पार्टी के टीबएमएम ग्रुप के चेयरमैन और डिप्टी चेयरमैन	नगापालिका असेंबली समूह	सीएसी के सदस्यों में से शहर के अध्यक्ष द्वारा नियुक्त कार्यकारी समिति	डीएसी के सदस्य के बीच से डीसी द्वारा नियुक्त जिला कार्यकारी समिति	कस्बाई कार्यकारी समिति

लेकिन समस्या यहीं खत्म नहीं होती है। अधिकांश संस्थापक नेताओं ने या तो पार्टी छोड़ दी है या गैर पक्षपाती राजनीतिक भूमिकाएं निभाई हैं।-अपने राष्ट्रपति आवास से पार्टी के मामलों को निर्देश देने की एर्दोगन की असीम क्षमता नहीं है । पार्टी के मामलों पर पूरा नियंत्रण रखने के लिए एर्दोगन को राष्ट्रपति प्रणाली के साथ देश की संसदीय प्रणाली में परिवर्तन लाना जरूरी है जिसमें ,राष्ट्रपति को संवैधानिक रूप से पार्टी में किसी भी पद को संभालने की अनुमति होगी।

आगे क्या?

हालांकि दावुतोग्लू से जबरन इस्तीफा ले लिए जाने के बाद सामने आया नेतृत्व संकट अस्थायी रूप से टल दिया गया और नए चुनाव को आगे बढ़ा दिया गया एकेपी ,एक ऐसे बिंदु पर आ गया है जहां इसके आंतरिक मामले चुपके से बाहर निकल आए। आंतरिक कलह एक तरह से जनता का ध्यान आकर्षित कर रही है, जिससे एकेपी सार्वजनिक दबाव और चुनावी नुकसान के लिए और अधिक कमजोर हो जाएगी , बशर्तेपार्टी एर्दोगन द्वारा बाहर निकाले गए सदस्यों के नेतृत्व वाले अपने पहले विभाजन का सामना करती है।

मई के बाद क्या होगा 22? असाधारण कांग्रेस को प्रधानमंत्री उम्मीदवार चुनना होगा, जो राष्ट्रपति के साथ आदर्श समन्वय में सरकार चला ए। दो विकल्प हैं शक्तिशाली" एक : राष्ट्रपति और शक्तिशाली प्रधानमंत्रीशक्तिशाली र" या "ाष्ट्रपति और निहायत आम प्रधानमंत्री या "एक एकेपी नेता अहमत उनल के अनुसार एक तीसरा विकल्प है एके पार्टी को मजबूत करने और सामंजस्यपूर्ण सरकार बनाने का।

सबसे महत्वपूर्ण उम्मीदवारों में परिवहन, समुद्री और संचार मंत्री, बिनली यिलदिरिम हैं; न्याय मंत्री, बेकिर बोज़दाग; ऊर्जा और प्राकृतिक संसाधन मंत्री, बेराट अल्बरेकजो , राष्ट्रपति एर्दोगन के दामादभी हैं; उप प्रधान मंत्री नुमान कुर्तुलम और स त्तारूढ़ पार्टी के उपाध्यक्ष मेहमत अली साहिन। उनमें से कई सादत पार्टी के संस्थापक सदस्य और पूर्व सदस्य हैं। शायद , इन सभी नेताओं के बीच उप प्रधान मंत्री नुमान कुर्तुलम सबसे स्वीका र योग्य नेता के रूप में उभर सकते हैं ,हालांकि बेकिर बोज़दाग को एर्दोगन के निकटता के लिए जाना जाता है। नुमान कुर्तुलम पुराने सादत पार्टी से हैं , जहां उन्हें अभी भी अधिक समर्थन और सहानुभूति मिलती है। उनकी उम्मीदवारी को रूढ़िवादी समर्थकों के चुनावी समर्थन से मजबूती मिल सकती है। पहली बार सांसद बने एर्दोगन के दामाद बेराट अल्बरेक को भारी वि रोध का सामना करना पड़ेगा, क्योंकि कई वरिष्ठ नेताओं को दरकिनार करने के लिए वह बहुत युवा हैं।

अब तक ऐसी संभावना नहीं लगती है कि पार्टी भविष्य में किसी भी तरह के विभाजन का सामना करेगी; जब तक कि जल्दी चुनाव की घोषणा नहीं की जाती है , जिसके लिए एर्दोगन का विरो ध किया जाता है। [11]आगामी ; मई को पार्टी अधिवेशन केवल अध्यक्ष ही चुनेगा 22 क्योंकि पिछले कांग्रेस ने

पहले ही सीडीएसी के , सदस्यों का चुनाव कर लिया था 50 जिसमें मेहमत सिमसेक, बेसिर अताले और सादुल्ला एर्गिन सहित कई प्रमुख चेहरे अपनी सीट हार गए थे।[12] एर्दोगन वर्चस्व वाली पार्टी से एकेपी के कई प्रमुख संस्थापक सदस्यों के अलगाव और बहिष्कार से पार्टी रैंक में उथल पुथल मच-सकती है। तुर्की की विकसित अर्थव्यवस्था और राजनीतिक स्थिरता के लिए सबसे अधि क आशंकाएं एके पार्टी में विभाजन को लेकर हैं ,जहां संभावित दोनों गुटों में पर्याप्त बड़े नाम हैं, मसलन; पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल्ला गुल ,[13]पूर्व मंत्री अली बाबाकन ,पूर्व मंत्री बुलेंट अरिनक और अन्य वरिष्ठ नेता जैसे पूर्व वित्त मंत्री मेहमत सिमसेक ,पूर्व उप प्रधानमंत्री बेसिर अताले ,सादुल्ला एर्गिन और कई अन्य ,जो एर्दोगन के विरोधी पक्ष में दिखाई देते हैं।

ऐसे परिदृश्य का जयादातर मई को ग्रैंड कांग्रेस पर निर्भर करता है जब पार्टी न केवल प्रधानमंत्री के 22 ;लिए उम्मीदवार को अंतिम रूप देगीबल्कि उनके संभावित मंत्रिमंडल को भी। यदि असंतुष्ट नेताओं को ठीक से समायोजित नहीं किया जाता है ,या एर्दोगन अपने दामाद बेरात अ ल्बेक को बढ़ावा देते हैं ,तो पार्टी एक नई दिशाओं की ओर बढ़ेगी में 2001 ;जिस स्थिति का सामना सादत पार्टी ने किया था ,जब युवा नेताओं ने एक नई पार्टी बनाने के लिए इसे तोड़ दिया था।

***

*डॉ. ओमैर अनस इंडियन काउंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स ,नई दिल्ली के रिसर्च फेलो हैं।
आलेख में जाहिर किए गए विचार शोधकर्ता के हैं न कि ;परिषद के।

अंत टिप्पण:

---

1 http://www.radikal.com.tr/politika/abdullatif-sener-akpden-istifa-etti-887938/.
2 “AKP moderate declared 'traitor',” 2 February 2016, http://www.al-monitor.com/pulse/originals/2016/02/turkey-moderate-akp-pillar-declared-traitor.html.
3 “AKP board takes back key authority from Davutoğlu,” 30 April 2016, http://www.hurriyetdailynews.com/akp-board-takes-back-key-authority-from-davutoglu.aspx?pageID=238&nID=98553&NewsCatID=338.

4 Translation of the Turkish blog is published at *The Turkish Sun* on 5 May 2016, text available here: "The Pelican Brief: Erdoğanist blog seeks to topple Davutoğlu, an English translation" http://theturkishsun.com/the-pelican-brief-erdoganist-blog-seeks-to-topple-davutoglu-an-english-translation-18140/.

5 "America's Global Image," Pew Research Center, 15 June 2015, http://www.pewglobal.org/2015/06/23/1-americas-global-image/.

6 "Opposition leaders call resignation decision a 'coup'", 5 May 2016, http://www.hurriyetdailynews.com/opposition-leaders-call-resignation-decision-a-coup-.aspx?pageID=238&nID=98785&NewsCatID=338

7 "20 confrontations between Davutoğlu and Erdoğan during 20 months of prime ministry," 6 May 2016, http://www.hurriyetdailynews.com/20-confrontations-between-davutoglu-and-erdogan-during-20-months-of-prime-ministry.aspx?pageID=238&nID=98825&NewsCatID=338.

8 "Turkey's AKP Party Struggles to Mend Internal Rift," 11 June 2015, http://www.voanews.com/content/turkeys-akp-party-struggles-mend-internal-rift/2817473.html.

9 "Turkey's AKP Party Struggles to Mend Internal Rift," 11 June 2015, http://www.voanews.com/content/turkeys-akp-party-struggles-mend-internal-rift/2817473.html.

10 Official Website of AK Party: https://www.akparti.org.tr/english/yonetim/mkyk.

11 "Erdoğan does not want early election, says economic advisor Bulut@, 9 May 2016, http://www.hurriyetdailynews.com/erdogan-does-not-want-early-election-says-economic-advisor-bulut.aspx?pageID=238&nID=98921&NewsCatID=338.

12 Akyol, Mustafa (2015), "AKP to its moderates: Don't let the door hit you on your way out", 6 September 2015, http://www.al-monitor.com/pulse/originals/2015/09/turkey-akp-bids-farewell-to-its-moderates-erdogan.html#ixzz48DPWodhP

13 "Bombshell book exposes Gul's differences with Erdogan@," 16 June 2015, http://www.al-monitor.com/pulse/originals/2015/06/turkey-former-president-gul-memoirs-bombshell-politics.html#.